ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 219-221**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

राष्ट्रीय सुरक्षा का नया मानकः आपरेशन सिन्दूरः एक विश्लेषण

डॉ0 रमा भाटिया

एसोसिऐट प्रोफेसर– रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन, डी0ए0वी0 कालेज, कानपुर (उ0प्र0) भारत

Received-10.04.2025, Revised-17.04.2025, Accepted-22.04.2025 E-mail :dr.ramabhatia48@gmail.com

सारांशः पाकिस्तान एक देश है लेकिन इसकी पहचान के साथ बहुत सी ऐसी चीजें गयी हैं जो किसी भी देश के लिए के लिए चिंता की बात होनी चाहिए। जैसे एक असफल देश। आतंक की नर्सरी। ढहती अर्थव्यवस्था वाला देश जो पुराने कर्ज की किश्तों को भरने के लिए नये कर्ज का जुगाड़ करता है। वैश्विक स्तर पर पाकिस्तान की कुल जमा यही पहचान है। हिन्दू और मुसलमान एक अलग कौम हैं और मुसलमानों का एक अलग देश होना चाहिए। इसी बुनियाद पर हिन्दुस्तान से अलग होकर पाकिस्तान बना। हालाकि 1971 में बाग्लादेश बनने, बलूचिस्तान में आजादी की जगं और सिंध का राष्ट्रवाद इस बुनियाद को खारिज करते हैं लेकिन पाकिस्तान के नेता और सैन्य अधिकारी आज भी हिन्दू और भारत विरोध को ढाल बनाकर ही अपनी सत्ता मजबूत करते हैं।

कुंजीभूत शब्द– राष्ट्रीय सुरक्षा, नया मानक, आपरेशन सिन्दूर, अर्थव्यवस्था, कर्ज का जुगाड़, वैस्विक स्तर, बुनियाद

भारत से तीन युद्ध हारने के बाद पाकिस्तान ने काश्मीर हासिल करने के लिए आतकंवाद का सहारा लिया और भारत के खिलाफ अप्रत्यक्ष युद्ध छेड़ दिया। पिछले 35 वर्षो में विश्व में बहुत कुछ बदला, लेकिन पाकिस्तान की भारत को लगातार नुकसान पहुॅचाने की सरकारों ने अलग–अलग समय पर पाकिस्तान के साथ सम्बन्ध सुधारने के प्रयास किये। भारत को इस प्रयास के बदले कभी कारगिल मिला तो कभी पठानकोट। पहलगाम में हुये नृशंस आतंकी हमले के बाद हर भारतीय को जुबान पर एक ही सवाल है कि इस पाकिस्तान का क्या इलाज है। प्रस्तुत शोध पत्र इस सवाल का जवाब तलाशने का प्रयास है।

पहलगाम में पाकिस्तान प्रायोजित आंतकवादियों के द्वारा अप्रैल के अंत में 26 नागरिकों की हत्या के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव चरम पर पहुॅच गया। इसके जवाब में भारत ने पाकिस्तान के बुनियादी ढॉचें को निशाना बनाने के लिए 'आपरेशन सिदूंर' की शुरूआत की। कई दौर की तनातनी के बाद अतं में दोनों देश युद्धविराम के लिए सहमत हो गये। 'आपरेशन सिन्दूर' के तहत पाकिस्तान में आंतकी ठिकानों पर भारत का हमला आतंकवाद के खिलाफ एक्शन था। भारत ने पाकिस्तान को साफ संदेश दिया है कि उसे आंतकी हमलों की कीमत इस हद तक चुकानी होगी, जो उसके लिए वहनीय नही होगी। संदेश दुनिया के लिए भी है कि भारत अब आतंकी हमलों पर साक्ष्यों के साथ समझाने का प्रयास नही करेगा। आपरेशन सिन्दूर के तहत भारत ने विश्व को भी संदेश दिया है कि पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद बर्दाश्त नंही किया जाएगा। भारत पाकिस्तान के न्युक्लियर ब्लैकमेल के आगे नही झुकेगा। भारत आंतकी हमलों के बाद विश्व को सबूतों के साथ सन्तुष्ट करने का प्रयास नंही करेगा, सुरक्षा खतरों पर फैसले खुद करेगा और अपनी सुविधा के अनुसार कदम उठाएगा। आपरेशन सिन्दूर ने राष्ट्रीय सुरक्षा नीति में कुछ नये सिद्धान्त प्रतिपादित किये हैं। पहला यह कि यदि आतंकी हमला होता है तो उसे 'एक्ट ऑफ वार' मानकर जवाबी कार्यवाही की जाएगी। दूसरा यह कि हम 'परमाणु ब्लैकमेलिगं से प्रभावित नहीं होगें और तीसरा यह कि आतंक पर प्रहार करने में आतंकियों और उनके सरक्षकों में कोई फर्क नहीं करेगें। पाकिस्तान को बता दिया गया कि आतंक और वार्ता साथ–साथ नहीं चल सकते और न ही आतंक और व्यापार। पानी और खून भी एक एक साथ नहीं बह सकते। यह सदेंश पाकिस्तान के साथ–साथ पूरी दुनिया के लिए भी है।[1]

भारत में आतंकी घटनायें 40–45 वर्षो से हो रहीं हैं परन्तु इनमें कुछ घटनायें इतनी गम्भीर रहीं कि इन्होनें तत्कालीन इतिहास को नया मोड़ दे दिया। बीते कुछ दशकों की घटनाओं पर दृष्टि डालें तो कुछ आतंकी हमले बहुत आहत करने वाले रहे। इनमें पहली घटना दिसम्बर 2001 को हुयी जब जैश आंतकियों ने भारतीय ससंद पर हमला किया। इस घटना को लेकर भारत में प्रबल आक्रोश पैदा हुआ। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा कि अब 'आर पार' की लड़ाई होगी। भारतीय सेना को 'आपरेशन पराक्रम' के अन्तर्गत पाकिस्तान पर हमले की तैयारी का निर्देश दिया गया, परन्तु कुछ कारणों विशेषकर अन्तर्राष्ट्रीय दवाब के चलते राजनीतिक नेतृत्व उस फैसले से पीछे हट गया। लेफ्टिनेंट जनरल एचएस पनाग के अनुसार यह ऐसा अवसर था, जब भारतीय सेना हर दृष्टि से पाकिस्तान को हराने में सक्षम थी, परन्तु हम मौका चूक गये।

दूसरी बड़ी आतंकी घटना तब हुयी, जब लश्कर–ए–तैयबा के आतंकियों ने नवम्बर 2008 को देश की आर्थिक राजधानी मुम्बई में एक साथ कई स्थानों पर हमले किये। समुद्र के रास्ते शहरों में घुसे आंतकियों ने 166 लोगों को मार दिया। यह भारत पर सबसे बड़ा आतंकी हमला था। दुर्भाग्य कहिए या तत्कालीन सप्रगं सरकार की कमजोरी, इस भीषण आंतकी हमले का कोई जवाब नहीं दिया गया। आंतरिक सुरक्षा को सुदृढ़ करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम जरूर उठाये गये। जैसे नैशनल सिक्योरिटी गार्ड–एनएसजी की इकाईयों को मुम्बई, कोलकता, चैन्नई और हैदराबाद में भी स्थापित किया गया। नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी यॉनि एनआइए का गठन किया गया। मल्टी एजेंसी सेन्टर की स्थापना हुयी और तटीय सुरक्षा योजना बनायी गयी जिसके अन्तर्गत समुंद्री मार्गो को सुरक्षित किया गया। इसके उपरान्त सितम्बर 2016 में उड़ी में पाकिस्तानी आंतकियों के हमलों में सेना के 18 जवानों ने अपनी जान गंवाई। इसके जवाब में गुलाम काश्मीर में सर्जिकल स्ट्राइक की गयी। फिर फरवरी 2019 में पुलवामा में भीषण आतंकी वारदात हुयी। इस पर भारतीय वायूसेना ने जवाबी कार्यवाही करते हुये बालाकोट में आंतकियों के ठिकानों पर बमबारी की जिसमें तमाम आंतकी मारे गयें। पहलगाम की घटना इस कड़ी में एक और बेहद बर्बर घटना है।[2]

आपरेशन सिन्दूर भारत की सैन्य और सामरिक शक्ति का एक महत्वपूर्ण प्रदर्शन था जिसे सैन्य और गैर सैन्य साधनों के संयोजन से अंजाम दिया गया। इस बहुआयामी आपरेशन ने आंतकवादी खतरों को प्रभावी ढ़ग से बेअसर कर दिया। पाकिस्तानी आक्रामकता को रोक दिया और आंतकवाद के प्रति भारत की जीरो–टोलरेंस की नीति को मजबूती से लागू किया। 2008 के मुंबई हमले के बाद पाकिस्तान समर्थित आंतकियों का आम नागरिकों पर यह बड़ा हमला था, लेकिन भारत सरकार ने 2008 वाली गलती को न दोहराते हुये सीमित और सटीक कार्यवाही से न सिर्फ पाकिस्तान को बल्कि विश्व को यह सन्देश दे दिया, कि आंतकवाद के खिलाफ भारत नयी नीति के साथ तैयार है। यह नीति है लम्बे युद्ध में शामिल हुये बिना आंतकी देश को सजा देना। यह नीति 9/11 के बाद शुरू हुये वैश्विक आंतकवाद के खिलाफ लड़ाई को एक नई दिशा देने वाली है जिसमे सिर्फ आंतकवादियों को मारना ही सीमित नंही है बल्कि उनके आंतकी नेटवर्क पर भी प्रहार करना आवश्यक है। आज के डिजिटल युग में युद्ध, पांरपरिक युद्ध के

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

मैदानों से आगे निकल गया है। इसमें सैन्य अभियानों के साथ–साथ एक भयकंर सूचना युद्ध भी चल रहा है। नेरेटिव और प्रोपेगेंडा युद्ध में भी पाकिस्तान द्वारा शुरू किये गये आक्रामक अभियान–जो झूठ और गलत सूचनाओं पर आधारित था, जिसका उददे्श्य सच्चाई को तोड़–मरोड़ कर पेस करना, वैश्विक जनता को गुमराह करना और गलत सूचनाओं के माध्यम से आतंकी देश स्वंय को पीड़ित और असहाय दिखा रहा था, उसके झूठे नेरेटिव का भारत ने कड़ा प्रतिकार करते हुये तथ्यों, पारदर्शिता के साथ पाकिस्तान को गलत सूचनाओं का सक्रियता से जवाब दिया तथा मजबूत डिजिटल सतर्कता दिखायी। भारत ने भावनात्मक रूप से प्रतिक्रिया करने के बजाय, सूचना युद्ध के लिए एक संयमित और व्यवस्थित दृष्टिकोण अपनाया।[3]

आपरेशन सिन्दूर के माध्यम से भारत ने एक तीर से दो शिकार किये हैं। पहले तो पाकिस्तान को सख्त सदेंश दिया कि आतंकी हमले के जिम्मेदार जिहादियों को उनके किये की सजा देने की भारत के पास दृढ़ इच्छाशक्ति और पर्याप्त क्षमतायें हैं। जिस उन्नत प्रौद्योगिकी, सटीक हथियारों और पूरी दक्षता के साथ भारत ने पाकिस्तान के भीतर जवाबी हमला किया, उससे कोई सन्देह नही रह गया कि आंतकवाद अगर अपने पंख पसारेगा तो भारत की ओर से उन्हे कतरने में कोई कोताही नही की जाएगी। आपरेशन सिन्दूर का दूसरा बड़ा सन्देश अन्तराष्ट्रिय समुदाय के लिए है जो पाकिस्तान पर दवाब डालने के साथ ही उसके व्यवहार में कुछ परिवर्तन ला सकता है। पहलगाम हमले के बाद से ही भारत ने कूटनीतिक विकल्पों के माध्यम से बड़ी शक्तियों के समक्ष पाकिस्तान को आतंक का पर्याय बनाकर पेश किया और उसके जघन्य कृत्यों के लिए न्याय की मांग की। भारत ने विश्व समुदाय को यह सन्देश दिया आतंक सहने की एक सीमा होती हैं। यदि विश्व समुदाय को सयमं बरतने का उपदेश देना ही है तो पाकिस्तान को दे। इसी तरह यदि विश्व समुदाय दक्षिण एशिया में शान्ति चाहता है तो पाकिस्तान पर इसके लिए दवाब बनाये कि वह अब अपनी जिहादी हरकतों से बाज आये। भारत ने आंतकवाद के खिलाफ नीति में बहुत बड़ा बदलाव किया है। अब किसी भी आंतकी हमले को भारत के खिलाफ युद्ध माना जाएगा। देश करीब चार दशकों से पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद का दंश भोग रहा है। ऐसे में यह पाकिस्तान के लिए बहुत बड़ा सकेंत है कि उसके लिए अब आंतकवाद की आड़ लेकर भारत के खिलाफ अप्रत्यक्ष युद्ध जारी रखना मुशिकल होगा।

भारत के प्रति पाकिस्तान का शत्रुभाव किसी जमीन के टुकड़े, व्यक्तिगत दुश्मनी या सत्ता सघंर्ष का परिणाम नहीं है। यह सदियों से चले आ रहे एक गहन वैचारिक सघंर्ष की उपज और दो पूरी तरह भिन्न दृष्टियों का टकराव है। जहॉ भारत समरसतापूर्ण, लोकतान्त्रिक और बहुलतावादी कालजयी सस्ंकृति का वाहक है, वही पाकिस्तान उस संर्कीण मजहबी चिन्तन की अभिव्यक्ति है जो आंठवी शताब्दी में अरब आक्रांता मोहम्मद बिन कासिम के साथ तलवार की नोंक पर इस भू–भाग में दाखिल हुयी थी। वैचारिक दृष्टिकोण से पाकिस्तान गजनवी, गौरी, बाबर, औरंगजेब, अब्दाली जैसे इस्लामी आक्रान्ताओं एवं षासकों को ही नायक मानता है जिन्होनें मजहबी जूनून के वशीभूत भारत में हिन्दुओं का कत्लेआम किया। उनके मन्दिरों को तोड़ा, सास्ंकृतिक प्रतीकों को रौदां। पाकिस्तान मानता है कि उस पर भारतीय उपमहाद्वीप में अधूरा 'गजवा–ए–हिन्दू' पूरा करने की मजहबी जिम्मेदारी है। यही कारण है कि यह सघंर्श दो देशों का नहीं बल्कि दो सभ्यताओं के बीच का द्वन्द है। पाकिस्तान का भारत पर पहला आतंकी हमला अपने जन्म के दो माह पश्चात् अक्टूबर 1947 में ही कर दिया था। तब उसकी सेना कबाइलियों के साथ मिलकर लूटपाट, हत्या और दुश्कर्म करते हुये श्रीनगर की ओर बढ़ रही थी। पाकिस्तान द्वारा 1965 के युद्ध के दौरान सयुक्त राश्ट्र में भारत के खिलाफ अगले 'एक हजार वर्षो तक लड़ने' की धमकी देना, 1971 के युद्ध में करारी हार के बाद भारत की 'हजारों घाव' देकर समाप्त करने की नीति अपनाना, 1984 में सियाचिन पर कब्जे का प्रयास, 1999 में मित्रता के बदले कारगिल में छुरा घोपना और भारत में तमाम आंतकी हमले करना उसी सदियों पुराने सभ्यागत संघर्ष का हिस्सा है। हमेशा मुंह की खाने के बाद भी पाकिस्तान के जूनूनी मजहबी उन्माद पर विराम नहीं लग पाया। भारत में एक के बाद एक आंतकी हमले होते रहें।[4]

भारत को पश्चिम को स्पष्ट रूप से यह बातना होगा कि काश्मीर हजारों वर्षो से भारतीय सस्ंकृति एवं सभ्यता का अभिन्न अंग रहा है। भारत पाकिस्तान की तरह दो–राष्ट्र सिद्धान्त पर आधारित न होकर एक जीवन, बहुलतावादी और विविधता से भरपूर लोकतन्त्र है जिसे साम्प्रदायिक सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता। यह एतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ वैश्विक मचों पर बार–बार सामने रखा जाना चाहिए ताकि पाकिस्तान और उसके समर्थक देशों के दुष्प्रचार का मुकाबला किया जा सके।

सामरिक दृष्टि से देखा जाए तो पहलगाम आंतकी हमले और उसके जवाब में आपरेशन सिन्दूर के बाद अब किसी तरह की ढ़िलाई की गुंजाइश नहीं छोड़ी जा सकती। अब युद्ध केवल पारम्परिक मोर्चे तक सीमित नहीं रह गया है। तकनीकी श्रेष्टता निर्णायक बन चुकी है। सैन्य तकनीक, आर्टीफीशियल इंटेलीजेंस और मानव रहित प्रणालियों को समझना जरूरी है। जमीनी खुफिया तंत्र से निरन्तर फीडबैक, मजबूत साइबर सुरक्षा ढाचां औरा त्वरित प्रतिक्रिया तंत्र को अपनाना होगा। अपने बढ़ते वैश्विक प्रभाव के मध्य भारत को न सिर्फ अपना कथानक, अपनी कहानी स्वयं कहनी–बतानी होगी, बल्कि उसे वैश्विक समस्याओं पर अपने दृष्टिकोण से दुनिया को भली भांति परिचित भी कराना होगा। करीब दो हजार साल पहले चीनी रणनीतिकार सान्तजू ने कहा था–''अगर आप अपने दुश्मन और अपनी क्षमताओं से परिचित हो तो आपको तमाम लड़ाइयों के परिणाम की फ्रिक करने की जरूरत नहीं है। अगर आपको अपनी क्षमतायें पता हैं, लेकिन दुश्मन की नहीं तो हर जीत की स्थिति में भी आप हार महसूस करेगें। अगर आप न अपने दुश्मन से परिचित हैं और न खुद से तो हर लड़ाई में आपकी हार तय है। पाकिस्तान के साथ जारी तनातनी में सान्तजू का यह षाश्वत ज्ञान' हमारे लिए बहुत उपयोगी है। पाकिस्तान में भारत को स्थायी शत्रु माना जाता है और यह कुविचार पाकिस्तानी जनता की मानसिकता में घुला हुआ है। भारत को पस्त करने के प्रयासों में अगर अपनी अर्थव्यवस्था भी तबाह हो जाये तो भी वहाँ इसे लेकर यही बरगलाया जाता है कि यह तो वह कीमत है जो हमें चुकानी पड़ेगी। पाकिस्तान को इसका खामियाजा भुगतना भी पड़ रहा है। पाकिस्तानी सेना और कुलीन वर्ग को आम जनता के हितों की कोई परवाह नहीं है। उनके स्वार्थ और फर्जी श्रेष्ठताबोध की कीमत आम पाकिस्तानियों को चुकानी पड़ रही है। हमें समझना होगा कि आतंक का स्त्रोत पाकिस्तान की सेना और उसकी खुफिया एजेंसी आइ एस आइ है। जब तक इन दोनों पर चोट नहीं की जाती, तब तक पाकिस्तान आतंकवाद का धन्धा करता रहेगा और भारत को तंग करता रहेगा। आवश्यकता इसकी है कि पाकिस्तान सेना की कमर तोड़ दी जाये और आइ एस आइ को ध्वस्त कर दिया जाये। हमें अपने सुरक्षा तंत्र को और सुदृढ़ करना होगा। सीमा की सुरक्षा, गोपनीय सूचनाओं को एकत्र करने और खतरा होने पर सुरक्षा बलों द्वारा तत्कालिक कार्यवाही, इन सभी में भी सुधार अपेक्षित है। अब हमें हर स्तर पर चेत जाना चाहिए, क्योंकि पानी सिर के ऊपर चला गया है।

भारत और अन्तराष्ट्रीय समुदाय के पास पाकिस्तान प्रायोजित सीमा पार आंतकवाद का जवाब देने और उसे रोकने के लिए राजनयिक, अर्थिक, रणनीतिक और कानूनी जैसे कई विकल्प मौजूद हैं। भारत को पाक के प्रति वैश्विक स्तर पर' कूटनीतिक अलगाव'

की नीति अपनानी चाहिए जिससे पाकिस्तान को अलग–थलग किया जा सके। आंतकवाद के खिलाफ भारत की चिन्ताओं के प्रति सहानूभूति रखने वाले देशों के साथ गठबंधन को मजबूत कर पाकिस्तान को आंतकवाद का प्रायोजित देश घोशित करने के लिए भारत को वैश्विक समर्थन जुटाना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय राय को अपने पक्ष में करके भारत सयुक्त राष्ट्र, जी 20 और एफ ए टी एफ (वित्तीय कार्यवाही कार्य बल) जैसे मचों पर प्राक्सी आंतकवाद के लिए पाकिस्तान के कथित समर्थन को उजागर करने के लिए सहयोगियों के साथ काम कर सकता है तथा निरन्तर या बढ़े हुये प्रतिबन्धों और निगरानी के लिए दवाब भी डाल सकता है। भारत पाकिस्तानी आतंकवादी संगठनों और व्यक्तियों को सूचबिद्ध कर और उसे प्रतिबन्धित करने के लिए सयुक्त राश्ट्र तथा अन्य अन्तराश्ट्रीय निकायों में डोजियर प्रस्तुत कर सकता है। पाकिस्तान के आंतकवाद विरोधी वित्तपोशण उपायों और अनुपालन की निरन्तर एफ एटी एफ से जॉच के लिए दवाब डालना, आंतकवाद के वित्तपोशण के खिलाफ अपर्याप्त कार्यवाही के लिए पाकिस्ताल को 'ग्रे लिस्ट' में रखने के लिए एफ ए टी एफ (वित्तीय कार्यवाही कार्य बल) जैसे मंच पर वैश्विक दवाब बनाना शामिल है जिससे पाकिस्तान को वैश्विक आर्थिक सहयोग तथा मदद मिलनी मुश्किल होगी। आतंकवाद से निपटना एक गम्भीर और सवेंदनशील मामला है। कूटनीतिक, रणनीति, आर्थिक तथा कानूनी माध्यमों के अलावा पाकिस्तान को चलाने वाला तीन एम ''मिलिट्री–मिलिटेंट–मुल्ला''–गठजोड़ के लिए अकेले सैन्य या दंडात्मक कार्यवाही पर्याप्त नंही होगी। इस आंतकी गठजोड़ को मजबूत करने वाले वैचारिक, सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक कारकों को भी सीमित करना होगा।[5]

पाकिस्तान की असली कमजोरी उसकी अर्थव्यवस्था है। उसके ऐसे सभी स्त्रोतों पर भारत को प्रहार करना चाहिए जहाँ से उसे तनिक भी विदेशी मुद्रा मिलती हो। अर्थव्यवस्था के सभी पैमानों पर भारत पाकिस्तान से मीलों आगे है। सयुक्तं राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि सगंठन के मुताबिक दुनिया का पाँचवा सबसे अधिक आबादी वाला देश होने के बावजूद पाकिस्तान अर्थव्यवस्था के आकार में 41 वें स्थान पर है। भारत सबसे अधिक आबादी वाला देश है तो इकोनौमी के आकार में जल्द ही जर्मनी को पछाड़कर तीसरे स्थान पर आ सकता है जबकि बदहाल आर्थिकी वाला पाकिस्तान आतंक का अड्डा बना हुआ है। विश्व बैंक के 2024 के आकडें को देखें तो भारत की जीडीपी 3.88 ट्रिलियन (लाख करोड़) डालर के करीब है जो पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था (0.37 ट्रिलियन डॉलर) के आकार से दस गुना अधिक है। भारत के पास 677 अरब डालर का विदेशी मुद्रा भण्डार है जबकि पाक के पास मात्र 15.5 अरब डॉलर है और उसमें भी एक हिस्सा उधार का है। पाकिस्तान का कुल कर्ज 70.36 लाख करोड़ पाकिस्तानी रूपये हो चुका है यानि हर पाकिस्तानी पर औसतन 2.34 लाख पाकिस्तानी रूपये का कर्ज है। अन्तराश्टीय एजेंसी फिज रेटिंग्स के मुताबिक पाकिस्तान को वित वर्ष 2024–25 में 2,200 करोड़ डालर से ज्यादा का बाहरी कर्ज चुकाना है। पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था इस समय पूरी तरह अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोश के भरोसे चल रही है। एफएटीएफ की बैठक में अगर पाकिस्तान 'ग्रे लिस्ट' में जाता है तो वह पाई पाई को मोहताज हो जाएगा। पाकिस्तान के साथ सभी तरह के कारोबारी रिश्तों को खत्म कर देना उसकी बरबादी का पहला चरण है।[6]

भारत इस समय अपनी सुरक्षा यात्रा के महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। आपरेशन सिन्दूर एक अन्तिम युद्ध नहीं, बल्कि भारत की क्षमताओं, इच्छाशक्ति और रणनीतिक कौशल का उद्धोश है। पाकिस्तान पोशित आतंकवाद से लड़ाई अब केवल एक क्षेत्रीय संर्घष नहीं रहा बल्कि वैश्विक शक्ति बनने की दिशा में भारत के लिए एक निर्णायक क्षण है। सतत चौकसी और भीषण प्रतिकार ही आंतकी घटनाओं को रोकने के लिए एकमात्र उपाय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ''राष्ट्रीय सुरक्षा नीति के नये सिद्धान्त'' प्रकाश सिंह, 23 मई 2025, दैनिक जागरण।
2. ''सामरिक शक्ति का शानदार प्रदर्शन'' डा0 अभिषेक श्रीवास्तव' दैनिक जागरण, 19 मई 2025।
3. ''आसानी से दूर नहीं होगा पाक का पागलपन'' बलवीर पुंज, 17 मई 2025, अमर उजाला।
4. ''सैन्य, आर्थिक, कूटनीतिक दवाब जरूरी'' डा0 अभिषेक श्रीवास्तव, 28 अप्रेल 2025, दैनिक जागरण।
5. ''पाकिस्तान की हर कमरजोरी पर हो प्रहार'' डा0 ब्रजेश कुमार तिवारी' 10 मई 2025, इण्डिया टूडे।

*****